International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1089-1090

संस्कृत पाठ्यपुस्तकों का एक क्रमबद्ध समालोंचनात्मक अध्ययन

डॉ. देवेश मुदगल
प्राचार्य, चिल्ड्रन्स एकेडमी बी. एड. कॉलेज, अलवर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

संसार की दिव्य, प्राचीन, मधुर, समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा संस्कृत देव वाणी कहलाती है द्य सम. कृ से क्त प्रत्यय लगाकर निर्मित संस्कृत शब्द का अर्थ है – संस्कार युक्त भाषा भाष्यते या सा भाषा जो बोली जाए वह भाषा है। सर्वप्रथम संस्कृत, भाषा के रूप में ही प्रयुक्त हुई थी, किन्तु वैदिक भाषा के बाद इसने क्रमशः साहित्य रूप को ग्रहण कर लिया।

बोलचाल की भाषा के अर्थ में ही संस्कृत का प्रयोग वाल्मीकी रामायण में मिलता है। वहां सीताजी से संभाषण करने से पूर्व हनुमान सोच विचार करते है कि यदि मै हिजाति की तरह संस्कृत में बोलूंगा तो मुझे रावण समझकर सीताजी डर जायेगी–

यदि वाचं प्रदास्यामि हिजातिरिव संस्कृताम ।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।।

संस्कृत का महत्व केवल भारत देश के लिए ही नहीं अपितु समस्त संसार के लिए है। यह संसार की एक निधि है। प्रचीन ज्ञान दृ विज्ञान, धर्म, संस्कृति, दर्शन, इतिहास एवं कला के आदि स्रोत वेदों की भाषा भी संस्कृत ही है जो संसार के लिए एक अमूल्य निधि है। वर्तमान समय में यह देव भाषा ह्रास की ओर अग्रसर है जिसका प्रमुख कारण अन्य विदेशी भाषाओं का अधिक प्रसार एवं प्रचार है। वर्तमान विद्यालयी पाठयक्रमों में भी संस्कृत भाषा को तृतीय भाषा के रूप में रखकर केवल पास होने का ही एक सोपान समझा जाता है। आज विद्याालयों में न ही तो योग्य एवं अनुभवी शिक्षक है जो संस्कृत भाषा के ज्ञाता हो। अधिकांश विद्यालयों में संस्कृत को हिन्दी विषय अध्यापक पास बुको के माध्यम से पाठयक्रम पूर्ण करवाने तक ही सीमित है। वर्तमान सरकार इस ओर ध्यान नहीं देती है। वर्तमान पाठयक्रम में भी संस्कृत को केवल रटन्त भाषा के रूप में समझकर केवल तृतीय भाषा के रूप में रखा गया है। अंग्रजी माध्यम के विद्याालयों में तो संस्कृत को वैकल्पिक विषय के रूप में रखा गया है। अंग्रेजी माध्यम में केवल अंग्रेजी को ही महत्व दिया जाता है।

माध्यमिक स्तरीय संस्कृत पाठयपुस्तकों को न तो आकर्षण बनाया गया है और न ही उसमें वर्तमान समस्याओं को जोडकर वैज्ञानिक बनाया गया है। वर्तमान पाठयक्रम में केवल साहित्य के कुछ विद्वान की रचनाओं को रखकर उसे निरस बनाया गया है।

पाठयक्रम निर्धारण में दो प्रश्न उपस्थित होते है:

1 प्रत्येक कक्षा को पढाने के लिए किस प्रकार का विषय चाहिए।
2 विषय सामग्री का विस्तार कितना हो।

परम्परागत पाठशालाओं में पढाई जाने वाली संस्कृत की अपेक्षा आधुनिक स्कूलों में पढाई जाने वाली संस्कृत भाषा में अन्तर है क्योंकि यहां स्कूलों में पढाई जाने वाली संस्कृत अनेक विषयों में से एक विषय हैं अतः इसका अध्ययन गहन रूप से नहीं किया जा सकता । पाठशालाओं में संस्कृत शिक्षण का उद्देश्य ग्रहण और अभिव्यक्ति दोनों रूपों में समान होता है वहीं स्कूल शिक्षा में ग्रहण ही परम उद्देश्य हो सकता है। अतः संस्कृत पाठ्यक्रम को निर्धारित करने के लिए कुछ नियमों का निर्धारण किया गया है। यथा:

(क) यह पाठयक्रम स्वतः सम्पूर्ण होना चाहिए, ताकि इसमें मौखिक कार्य उच्चारण, वाचन, शब्दावली, व्याकरण, रचना, अनुवाद समालोचना आदि सभी विधाएं शामिल हो।
(ख) पाठय सामग्री बालकों की प्रवृतियों ,रूचियों और बौद्विक स्तर के अनुकूल हों
(ग) पाठ्यक्रम में छात्रों की पृष्ठभूमि तथा पूर्वज्ञान आदि का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। पाठों के लिए जो विषय चुने जाए, वे छात्रों के भैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण से लेने चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि छात्रों का स्थानीय वातावरण और वायुमण्डल क्या है। छात्रों की भाषा विषयक योग्यता का भी ध्यान रखना चाहिए।
(घ) पाठ्यक्रम में ऐसे विषय होने चाहिए जिनका इतिहास भूगोल, विज्ञान, क्रीडा, आदि क्षेत्र से सम्बन्ध हो।
(ड) पाठ्यक्रम लचकदार होना चाहिए, ताकि छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूराकर सके।
(च) पाठ्यक्रम में रोचकता और विविधता का ध्यान रखना चाहिए।
(छ) पाठ्यक्रम में शब्दावली का चयन ध्यानपूर्वक करना चाहिए। पर्यायवाची शब्द सरलम हो । उन्ही धातुओं का प्रयोग होना चाहिए जों अधिक प्रयुक्त होते है। शब्दरूपों का क्रम निश्चित हो।
(ज) पाठयक्रम में जितने भी पाठ हो वे सम्पूर्ण होने चाहिए जिसके अन्तर्गत निम्न भाग निश्चित हो–
  1 पाठ का शीर्षक
  2 पाठ में आये कठिन शब्द।
  3 पाठ में यदि व्याकरण के किसी नये नियम का प्रयोग हो, उसका संकेत।
  4 पाठ सम्बंधी चित्र।
  5 पाठ के अन्त में कठिन शब्दों के अर्थ , सन्धि विच्छेद , समास विग्रह , धातु एवं शब्द रूप, कठिन निवारण ।
  6 पाठ के अन्त में कवि एवं मुख्य ग्रन्थ का परिचय हो।
  7 अभ्यास कार्य ।
  8 अनुवाद अभ्यास।
  9 छन्द अलंकारों का संक्षिप्त अभ्यास एवं सामान्य ज्ञान ।

भविष्य में किसी भी पुस्तक के निर्माण से पूर्व इन नियमों की दृष्टि गोचर रखते हुए ही पुस्तक का निर्माण करना चाहिए।

संस्कृत भाषा को शिक्षा क्रम में उचित स्थान देने के लिए सर्वप्रथम

पाठयक्रम में सुधार एवं नवीनतम प्रक्रियाओं का प्रयोग आवश्यक है। कविता पाठ और गद्य पाठ पढाने की नवीन विधियों का प्रयोग होना चाहिए। रचना कार्य को प्रमुखता देनी चाहिए। मूल्यांकन की नवीन पद्वतियों का प्रयोग हो। इन सभी विषयों को लकर यह अनुसंधान कार्य किया गया है। इस शोध कार्य के माध्यम से माध्यमिक स्तर की पाठयपुस्तकों को अधिक उपयोगी बनाया जा सकेगा । जहां विज्ञान की विषय सामग्री ज्ञानार्थ है वहां भाषा की विषय सामग्री कौशलार्थ हैं भाषा का प्रमुख उदेश्य विचार विमर्श और सम्प्रेषण है। भाषा को ग्रहण एवं अभिव्यक्ति का साधन माना गया है। जिसके लिए पाठयक्रम को उचित एवं मानक उदेश्यों पर आधारित होना आवश्यक है। अतः वर्तमान पाठयक्रम को सात उद्देश्यों पर आधारित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। ये निम्न हैश

1 ग्रहणात्मक
2 अभिव्यक्ति
3 कलात्मक एवं रसानुभूति
4 सांस्कृतिक
5 रचनात्मक
6 मनोविनोद
7 ज्ञानात्मक।

इन सभी उदेश्यों को ध्यान में रखते हुए ही कार्य किया गया है। यह एक विस्तृत विझ्य है फिर भी कागज की नौका से समुद्र पार करने के समान यह कठिन कार्य करने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ

1. अनास्तासीः "साइक्लोजी टेस्टिग", मैकमिलन एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क, 1959
2. भार्गव, महेशः आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हरप्रसाद मार्ग शैक्षिक प्रकाशन, आगरा।
3. क्रोन बैक, ली.जे.ः असेंशियल फॉर साइक्लोजीकल टेस्टिंग, हॉपर एवं रॉ न्यूयार्क, 1972
4. कार्टर, वी. गुडः बेसिक एण्ड स्ट्रक्चर ऑफ नोलेज, न्यूयार्क हारपर एण्ड बदर्स, 1948
5. क्रोवेल, वी.ः दा साइंटिफिक मेथर्ड, बेसिक बुक पब्लिकेशन्स, 1968
6. डेविस, सी.ः दा मेजरमेन्ट ऑफ साइंटिफिक एटिट्यूड, साइंस एज्यूकेशन, 1935
7. डोडीयान पाठकः शिक्षा अनुसंधान के विज्ञान शास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
8. फ्रीमैन फ्रैकः थ्योरी एण्ड प्रकिटस ऑफ साइक्लोजिकल टेस्टिंग, आक्सफोर्ड पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1971